18/8/19

पाठ - 3 = शब्द विचार

पद :-

जब शब्द, वाक्य में प्रयुक्त हो जाते हैं तब इन्हें 'पद' कहते हैं।

शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया गया है।

क. उत्पत्ति के आधार पर
ख. रचना (व्युत्पत्ति के आधार पर)
ग. अर्थ के आधार पर
घ. प्रयोग के आधार पर

(क) उत्पत्ति के आधार पर :-

शब्द की उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं —

(i) तत्सम :-

संस्कृत के वे शब्द जो ज्यों के त्यों हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।
जैसे ⇒ सूर्य, अग्नि, दंत आदि।

(ii) तद्भव शब्द :-

संस्कृत के जो शब्द थोड़े परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रयुक्त किए जाते हैं, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं।
जैसे ⇒ सूरज, दाँत, आग आदि।

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द
उलूक	उल्लू
हस्त	हाथ
सर्प	साँप
आम्र	आम
नृत्य	नाच
कर्म	काम
वृद्ध	बूढ़ा
लौह	लोहा
अग्नि	आग
अष्ट	आठ
अग्र	आगे
सत्य	सच
मयूर	मोर
लज्जा	लाज

(iii) देशज शब्द :- जो शब्द हिंदी की लोकभाषा यानि कि हिन्दी प्रदेश की आम बोलचाल से हिन्दी भाषा में आए हैं, वे देशज शब्द कहलाते हैं।
जैसे ⇒ लोटा, थैला, पैर आदि।

(iv) विदेशी शब्द / आगतशब्द :- विदेशी भाषा के शब्दों का समावेश जब हिन्दी में हो, उसे विदेशी शब्द कहते हैं।
जैसे ⇒ अरबी, फ़ारसी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि।

⇒ फारसी से – अफ़सोस, शिकायत, गिरफ्तार, दुकान आदि।

⇒ अंग्रेजी से - डॉक्टर, सिगरेट, नंबर, टेलीफोन आदि।

⇒ तुर्की - गलीचा, कैंची, चाकू, कमीज़ आदि।

⇒ चीनी - चाय, लीची आदि।

⇒ पुर्तगाली - तौलिया, बाल्टी, साबुन, अलमारी आदि।

(ख) रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं:-

क. रूढ़
ख. यौगिक
ग. योगरूढ़

क. रूढ :-
जिन शब्दों के टुकड़े या खंड करने पर खंडित उनका कोई अर्थ नहीं निकलता, वे परंपरा से प्रयोग होते चले आ रहे हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।
जैसे ⇒ दिवस, पुस्तक आदि।

ख. यौगिक :-
जिन शब्दों का खंड करने पर खंडित शब्दों के भी क अर्थ निकलते हैं, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। ये एक से अधिक शब्दों के मेल (योग) से बनते हैं।

जैसे ⇒ विद्यालय - ('विद्या' एवं 'आलय' के योग से बना)
घुड़सवार - ('घोड़ा' एवं 'सवार' के योग से बना)

ग. योगरूढ :-
जो शब्द से दो या अधिक शब्दों शब्दों के मेल से बनते हैं, लेकिन एक विशेष अर्थ के रूप में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।
जैसे ⇒ पीतांबर (कृष्ण), दशानन (रावण), पंकट (कमल) ~~हिमालय~~

(ग) प्रयोग के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं :-

क. विकारी शब्द
ख. अविकारी शब्द

क. विकारी शब्द :-
जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक व काल के अनुसार परिवर्तन या विकार आ जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्द चार हैं-

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द विकारी शब्द हैं।

ख. अविकारी शब्द :-
जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक के अनुसार परिवर्तन या विकार नहीं आता उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।
अविकारी शब्द पाँच होते हैं।
क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक एवं निपात।

(घ) अर्थ के आधार पर शब्दों के छह भेद हैं -

क. विलोम शब्द
ख. एकार्थी शब्द
ग. पर्यायवाची शब्द
घ. अनेकार्थी शब्द
ङ. ~~श्रु~~ श्रुतिसम / भिन्नार्थक शब्द
च. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

क. विलोमशब्द ⇒ ये शब्द परस्पर उल्टा अर्थ बताते हैं। जैसे :- रात-दिन।

ख. एकार्थी शब्द ⇒ ये वे शब्द हैं जिनका एक ही अर्थ होता है। जैसे :- नृत्य-नाच।

ग. पर्यायवाची शब्द ⇒ ये एक ही अर्थ बताने वाले शब्द हैं। जैसे :- चंद्रमा - शशि, चाँद, इंदु।

घ. अनेकार्थी शब्द ⇒ ये ऐसे शब्द हैं जिनके कई अर्थ होते हैं। जैसे :- उत्तर - जवाब, दिशा।

(ङ) श्रुतिसम / भिन्नार्थक शब्द ⇒ ये वे शब्द हैं जो सुनने में एक जैसे लगते हैं पर अर्थ भिन्न होते हैं। जैसे:- चिर - देर तक, चीर - वस्त्र।

च. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द ⇒ ये वे शब्द हैं जो अनेक शब्दों के स्थान पर आते हैं। जैसे :- जो ईश्वर को मानता हो - आस्तिक ,